



верасень

APPLES

At the end of the summer were reaped the sweetest, most juicy and crisp apples of my childhood. My grandfather was very proud of his fine apple tree. It was forbidden to harvest these apples when they were yet green. When harvest time came, my grandfather would go behind the house from time to time, where the trees were, to check on them. Upon coming back he would say: "The apples will soon be ready." On the day he decided the apples were ready, we together went with a harvesting rod - a long, wooden stick with a special ending for hooking off the apples; and we went to collect them. The collected apples I passed to my grandfather, who carefully pulled out the stems and cautiously put them in a crate that was on the ground. While collecting, it was forbidden to pull out the apples along with small branches or to knock or shake them down. The tree was to be respected. After that we took a crate heavy with apples to the cellar and left it there in the coldest corner. My grandfather said: "Here we go, it will suffice for the Autumn; and for the Winter we will prepare a Winter apple." When my grandfather was gone the apples were gone with him." The apples will soon be ready", but nobody will go to grandfather's house to respect the tree. The apples, like my grandfather, will be collected by

1995/2017

| | СТУДЗЕНЬ | | | | | | люты | | | | | | САКАВІК | | | | | | красавік | | | | | |
|------------------|----------|----|------|----|----|------------|------|---------|----|----|----|----------|---------|--------|----|----|----|----------|----------|----------|----|----|----|--|
| MECIH | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 | | | 6 | 13 | 20 | 27 | | | 3 | 10 | 17 | 24 | |
| ярэц | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 | | | 7 | 14 | 21 | 28 | | | 4 | 11 | 18 | 25 | |
| РА ДАЎНІК | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | | 5 | 12 | 19 | 26 | |
| пярунец | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | | 6 | 13 | 20 | 27 | |
| грамніца | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | | 7 | 14 | 21 | 28 | |
| ЛАДЗІЧ | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 | | | 4 | 11 | 18 | 25 | | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | |
| СОЎНІК | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 | | | 5 | 12 | 19 | 26 | | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | |
| | травень | | | | | | | Чэрвень | | | | | | ЛІПЕНЬ | | | | | | жнізвінж | | | | |
| MEC14 | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | | 5 | 12 | 19 | 26 | | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 | |
| ярэц | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | | 6 | 13 | 20 | 27 | | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | |
| РА ДАЎНІК | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | | 7 | 14 | 21 | 28 | | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | |
| ПЯРУНЕЦ | 4 | 11 | 18 | 25 | | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | |
| грамніца | 5 | 12 | 19 | 26 | | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 | | |
| ларзіч | 6 | 13 | 20 | 27 | | | 3 | 10 | 17 | 24 | | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 | | |
| соўнік | 7 | 14 | 21 | 28 | | | 4 | -11 | 18 | 25 | | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 | | |
| | вердсень | | | | | КАСТРЫЧНІК | | | | | | ЛІСТАПАД | | | | | | СРНЕЖЧНР | | | | | | |
| MEC14 | | 4 | - 11 | 18 | 25 | | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 | | | 4 | 11 | 18 | 25 | |
| дечк | | 5 | 12 | 19 | 26 | | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 | | | 5 | 12 | 19 | 26 | |
| РА ДАЎНІК | | 6 | 13 | 20 | 27 | | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | | 6 | 13 | 20 | 27 | |
| ПЯРУНЕЦ | | 7 | 14 | 21 | 28 | | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | | 7 | 14 | 21 | 28 | |
| ГРАМНІЦА | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | |
| ЛАФЗІЧ | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 | | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | |
| соўнік | 3 | 10 | 17 | 24 | | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 | | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

АНАНАСЫ

Пад канец лета ў садзе сасыпявалі самыя салодкія, самыя сакавітыя і самыя хрумсткія яблыкі майго дзяцінства. Эзядуля вельмі ганарыўся сваім ананасавым дрэвам. Гэтыя яблыкі было забаронена ірваць зялёнымі. Калі набліжаўся час высыпяваныня, дзядуля хадзіў раз-пораз за хату, дзе расло тое райскае дрэва, а вярнуўшыся, казаў: "Ужо скора будуць ананасы". У дзень, калі дзядуля вырашаў, што яблыкі ўжо гатовыя, мы бралі "сьёмку" – доўгую драўляную жэрдку са спэцыяльным канцом для "лову" райскай садавіны – і йшлі шчыпаць. Зынятыя яблыкі я перадаваў дзядулю, той акуратна вырываў дудкі і старанна адкладаў у скрыню, якая стаяла далавах. Падчас шчыпаньня нельга было адрываць яблыкі з галінкамі, нельга было таксама зьбіваць іх ці тым больш трэсьці ўсім дрэвам. Эрэва трэба было шанаваць. Пасьля мы адносілі цяжкую, поўную з коптурам скрыню ў склеп і ставілі ў самы халодны кут, а дзядуля казаў: "Ну вось, будзе на цэлую восень, а на зіму паставім антонаўку". Калі дзядулі ня стала, ня стала і ананасаў. "Ужо скора будуць ананасы", але ніхто не паедзе ў дзедаву хату, каб ушаноўваць дрэва. Яблыкі, як і майго дзядулю, зьбярэ сабе Зямля...